प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2020
प्रेषण तिथि : 04 जून, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 06 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

भारतीय पंचांग अनुसार मनाई प्रताप जयंती

ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया तद्नुसार 25 मई को भारतीय पंचांग के अनुसार महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। कोरोना काल के कारण भौतिक समारोह संभव न होने के कारण सभी कार्यक्रम इंटरनेट के सहयोग से ऑनलाईन ही रखे गए। श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा केन्द्रीय कार्यक्रम का प्रसारण गुजरात के सुरेन्द्र नगर स्थित क्षेत्रीय कार्यालय 'शक्तिधाम' से किया गया। गुजरात में विगत 10 वर्षों से परम्परा रही ही कि महाराणा प्रताप की जयंती के साथ हरभमजी राव जी (मोरबी), पूज्य हरिसिंह जी गढुला, श्री मन्नुभा चेर एवं श्री चन्द्रसिंह जी भाडवा की जयंती मनाई जाती है। उसी परम्परा के तहत इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा ने कहा कि जयंतियां उन लोगों की मनाई जाती है जिन का जीवन संसार के लिए संदेश होता है। उन्होंने अपना संदेश बोलकर नहीं बल्कि जीवन जीकर दिया था। हम जिन महापुरुषों का आज जन्म दिन मना रहे हैं उन्होंने संदेश दिया कि वे क्षत्रिय थे और क्षत्रिय का जीवन स्वयं के लिए नहीं होता इसलिए उन्होंने पूरा जीवन दूसरों के लिए जीया। जो दूसरों के लिए जीवन जीते हैं, उनका ही इतिहास बनता है। आज के दिन उनके जैसा जीवन जीने का संकल्प यदि हमारे अंतर में जगता है, तो जगने दें। आज हम इतिहास बनाना

संघ का केन्द्रीय कार्यक्रम (शक्तिधाम, गुजरात)

तो दूर बल्कि इतिहास को जान भी नहीं पा रहे हैं। जो समाज इतिहास को भूल जाता है उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। हम हमारा इतिहास भूलते जा रहे हैं इसलिए समाज चिंतक को डर सताता है कि हमारा समाज कैसे जीवित रह पाएगा? प्रताप का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि प्रताप ने जैसा जीवन जीया, जैसी सुव्यवस्था दी, अनवरत संघर्ष के बीच जिस प्रकार जीवन के कोमल पक्ष व कलाओं को संरक्षण व बढ़ावा दिया, जिस प्रकार पूरी जनता को जागृत कर आततायी से संघर्ष में शामिल किया और जिस सूझबूझ व दूरदर्शिता से इतना लंबा संघर्ष किया वह सब किसी साधारण शासक द्वारा संभव नहीं था। वे एक असाधारण शासक थे जिनकी तुलना में तात्कालिक समय में कोई अन्य नहीं था। आज का दिन भामाशाह को याद करने का दिन है, झाला मानसिंह को याद करने का दिन है। उन सब भीलों को याद करने का भी दिन है जिन्होंने प्रताप के संघर्ष में स्वयं का बलिदान दिया। प्रताप का संघर्ष हिन्दू-मुसलमान का संघर्ष नहीं था बल्कि सनातन सिद्धान्तों के लिए संघर्ष था। हाकिम खां सूर एक पठानों के लश्कर के साथ प्रताप के संघर्ष में शामिल था। हल्दीघाटी का युद्ध अकबर का असफल प्रयास था, वह प्रताप को जिंदा या मुर्दा पकड़ने में असफल रहा। जिस भी व्यक्ति के मन में वीरत्व के प्रति सम्मान की भावना होगी, उसे प्रताप हमेशा आकर्षित करते रहेंगे, प्रेरणा देते रहेंगे। प्रताप के साथ आज हम हरभम जी राव मोरबी को याद कर रहे हैं जिन्होंने अंग्रेज सरकार की उच्च वेतन वाली नौकरी छोड़कर समाज जागरण के लिए काम किया। आम राजपूतों को संगठित कर कच्छ काठियावाड़ गुजरात गरासिया एसोसिएशन की स्थापना की। आम राजपूतों की शिक्षा के लिए विशेष प्रयास किए व अंग्रेज सरकार से धंधुका गेस्ट हाऊस लेकर उसे छात्रावास का रूप दिया।

तत्पश्चात अनेक छात्रावास बनवाए। इसी प्रकार मन्नु भा चेर धंधुका के निकट छोटे से गांव के जागीरदार थे। पढ़े-लिखे कम थे लेकिन समझदार बहुत थे। आर्य समाज व गांधीजी के सम्पर्क में रहे। खादी पहनते थे लेकिन तलवार सदैव साथ रखते थे। उन्होंने राजपूतों को खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। चुड़समा राजपूत समाज का संविधान बनवाया। सम्मेलन आयोजित करवाए। भावनगर के निकट अखिल गुजरात राजपूत सम्मेलन की अध्यक्षता की। उस सम्मेलन में 15000 प्रतिनिधि तीन दिन तक रुके। उनके ही प्रयासों के कारण आज गुजरात में चुड़ासमा समाज राजपूतों का 'पावर हाउस' कहलाता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आवश्यक सूचना

सभी सम्मानित ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि कोरोना संकट में हुए लोकडाउन के कारण अप्रेल व मई माह के अंक आपको नहीं भेजे जा सके। इसलिए आप सभी की ग्राहक सदस्यता समाप्त होने की तारीख दो माह आगे बढ़ा दी गई है।

जयपुर

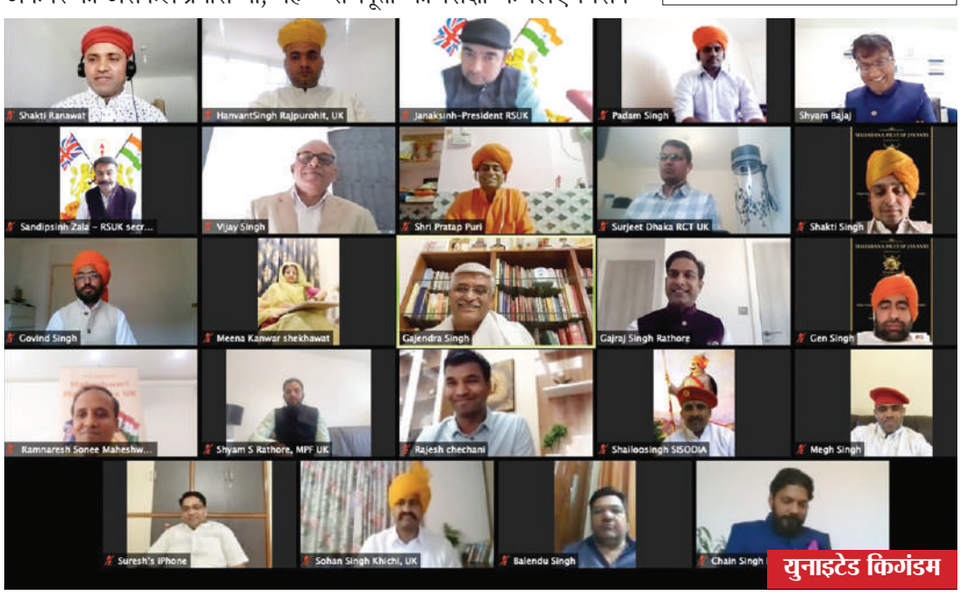

युनाइटेड किंगडम

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

वर्तमान में भारतीय राजनीति में बंटवारा अपनी प्रधानता पा गया है। जाति, पंथ, संप्रदाय एवं पूजा पद्धतियों के नाम पर तुष्टिकरण की क्रिया प्रतिक्रिया ने पूरे समाज को राजनीतिक रूप से इतना बांट दिया है कि वह बंटवारा जीवन के हर क्षेत्र में दृष्टिगोचर होने लगा है। इस बंटवारे का ही परिणाम है कि वर्षों से साथ रहने वाले लोग एक दूसरे को शक की दृष्टि से देखने लगे हैं। सरकारों के दिशा निर्देश भी इसी आधार पर जारी होने लगे हैं और आम नागरिक उनकी पालना भी इसी दृष्टिकोण से करने लगे हैं। इस प्रकार राजनीतिज्ञों द्वारा अपनी राजनीति के लिए किया गया यह बंटवारा सामान्य जनजीवन में गहरा पैठता जा रहा है। ऐसे में आज के राजनीतिज्ञों के लिए पूज्य तनसिंह जी के जीवन की यह घटना नजीर पेश करती है।

संसद की अंतरंग समितियों के चुनाव हो रहे थे। पूज्य तनसिंह जी उस समय रामराज्य परिषद् पार्टी से सांसद के रूप में निर्वाचित हुए थे। मुस्लिम लीग के एक सांसद किसी कमेटी के प्रत्याशी थे। वे पूज्य तनसिंह जी के पास आए और पूछा कि आप कौनसी पार्टी से सांसद बनकर आए हैं? पूज्य श्री ने उत्तर दिया 'राम राज्य परिषद से।' उस सांसद के मुख से स्वाभाविक रूप से निकला, 'तब क्या बात करनी है।' और वे जाने लगे। पूज्य तनसिंह जी ने उन्हें रोका और पूछा कि फरमाइए क्या बात है? उन्होंने कहा कि मैं एक संसदीय समिति का प्रत्याशी हूं और एक वोट चाहिए। पूज्य श्री ने कहा कि मिल जाएगा, इसमें असमंजस कैसा? उक्त सांसद महोदय ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि आप राम राज्य परिषद वाले मुस्लिम लीग के प्रत्याशी को वोट देंगे? पूज्य श्री का जवाब था कि मेरी पार्टी की ओर मेरी नजर में एक दीनदार मुसलमान बेदीन और बेईमान हिन्दु से कही ज्यादा अच्छा है। मुस्लिम लीग के सांसद महोदय उक्त जवाब सुनकर अवाक हुए बिना नहीं रह सके। एक सनातनी राजपूत के लिए अपने पराए की परिभाषा किसी जाति, पंथ या संप्रदाय से ही निर्धारित नहीं होती बल्कि उसके निर्धारण में अच्छाई-बुराई, धर्म-अधर्म, दीन-बेदीन, ईमान-बेईमान ही महत्वपूर्ण कारक होते हैं। काश हमारे आज के राजनेता इस शाश्वत सिद्धान्त को अपने जीवन व्यवहार में ढाल पाते और पूरी जनता को क्रिया-प्रतिक्रिया में उलझा कर स्थायी बंटवारे की ओर अग्रसर करने से बाज आते।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

ESE (इंजीनियरिंग सर्विसेज एग्जाम)

इसे IES अर्थात इंडियन इंजीनियरिंग सर्विसेज एग्जाम के नाम से भी जाना जाता है, यद्यपि इसका अधिकृत नाम इंजिनीयरिंग सर्विसेज एग्जाम है। संघ लोक सेवा आयोग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस परीक्षा के माध्यम से भारत सरकार के विभिन्न विभागों में कार्य करने हेतु इंजीनियर के पदों पर भर्ती की जाती है। इन्हें चार क्षेत्रो - सिविल, इलेक्ट्रिकल, मेकैनिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन्स में काम करने हेतु चुना जाता है। सफल अभ्यर्थियों को भारत सरकार के विभिन्न विभागों यथा- रेलवे, टेलीकॉम, मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विसेज, CPWD, CWC, CPES, NHAI आदि विभागों में नियुक्ति मिलती है।

इस परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए सामान्य श्रेणी के अभ्यर्थी की न्यूनतम आयु 21 वर्ष तथा अधिकतम आयु 30 वर्ष है। ESE के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के रूप में मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी से इंजिनीयरिंग डिग्री प्राप्त होना आवश्यक है (विभिन्न श्रेणियों हेतु न्यूनतम योग्यताओं में मिलने वाली छूट के लिए संघ लोक सेवा आयोग द्वारा जारी विज्ञप्ति अवश्य देखें)।

यह परीक्षा तीन चरणों में सम्पन्न होती है-

(i) प्रारंभिक परीक्षा - इसके अंतर्गत दो प्रश्नपत्र होते हैं-

(अ) सामान्य अध्ययन व इंजीनियरिंग एप्टीट्यूड : यह प्रश्नपत्र बहुवैकल्पिक प्रकार का होता है। इसमें कुल 100 प्रश्न पूछे जाते हैं तथा प्रत्येक सही उत्तर के लिए 2 अंक मिलते हैं। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए .66 अंक काटे जाते हैं। प्रश्नपत्र की अवधि 2 घण्टे की होती है।

(ब) इंजीनियरिंग डिसिप्लिन : इसके अंतर्गत अभ्यर्थी को सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मेकैनिकल इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन्स इंजीनियरिंग में से कोई एक प्रश्नपत्र चुनना होता है। यह भी बहुवैकल्पिक प्रश्नपत्र होता है तथा इसकी अवधि 3 घण्टे की होती है। इसमें कुल 150 प्रश्न पूछे जाते हैं तथा प्रत्येक सही उत्तर के लिए 2 अंक मिलते हैं। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए .66 अंक काटे जाते हैं।

(ii) मुख्य परीक्षा- प्रारंभिक परीक्षा क्वालीफाई करने वाले अभ्यर्थी ही मुख्य परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए पात्र होते हैं। इसके अंतर्गत भी दो प्रश्न पत्र होते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

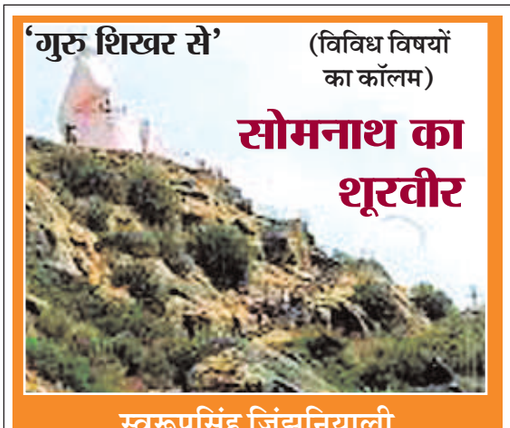

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

गुजरात के सौराष्ट्र में एक क्षेत्र गोहीलवाड़ कहलाता है जिसमें भावनगर मुख्य रियासत थी। पालीताणा, वल्भीपुर, लाठी आदि इन्हीं के भाईबन्धु हैं। सौराष्ट्र में बसने से पहले इनका राज्य खेड़ नगरी (वर्तमान बाड़मेर के बालोतरा के पास) पर था परन्तु राव सीहा राठौड़ एवं उनके वंशजों ने युद्ध में इन्हें हराकर मारवाड़ में अपना शासन स्थापित किया तो ये समुद्र (अरब सागर) के किनारे जा बसे। मारवाड़ को काचरी, केर, सांगरी, पीलू तो छूट गए परन्तु काठियावाड़ में केशर आम व नारियल के क्षेत्र में आकर भी तलवार तो गोहीलों की वाली (प्यारी) रही। गोहील वंश में अनेकों वीर योद्धा हुए। इनमें ऐसे ही एक वीर थे श्री हमीर जी भीमजी गोहील। ये लाठी रियासत के भीम जी गोहील के सबसे छोटे एवं तीसरे पुत्र थे। इनके बड़े भाई अर्जुन गोहील थे।

एक बार मंझले भाई अरजन जी एवं हमीर जी के मध्य दो मुर्गो की लड़ाई में हार-जीत के विवाद पर अरजन जी द्वारा 'हमारे यहां से निकल जा' कहने पर अपने कुछ साथियों के साथ सौराष्ट्र से मारवाड़ आ गए। परन्तु आवेश में भाई हमीर जी को परदेश जाने को बात कहने वाले अरजन जी को अपने भाई की याद सताने लगी। उन्होंने एक चारण कवि को उन्हें लाने मारवाड़ भेजा। हमीर जी वापिस अपने वतन आ गए। दिल्ली की गद्दी पर उन दिनों मोहम्मद तुगलक द्वितीय शासक था। जूना गढ़ के सुबेदार को काठियावाड़ी राजपूतों ने हरा दिया था अतः उसकी जगह जफर खां की नियुक्ति की गई। जफर खां सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर को लूटना एवं तोड़ना चाहता था। एक बार शिवरात्रि के सोमनाथ महोत्सव पर जफर खान ने अपने अधिनस्थ रसूल खां को मंदिर भेजा कि वहां अधिक संख्या में भक्तगण न आवें। अधिक रोक-टोक करने पर दर्शनार्थियों ने रसूल खां को मार दिया। इस पर जफर खां ने क्रोधित होकर सोमनाथ पर आक्रमण करने की सोची। उधर अरजन जी के निमंत्रण पर भाई हमीर जी अपने बड़े भाई के पास गढाली पहुंच चुके थे। वे कुंवारे थे अतः अपने बड़े भाई की पत्नी 'भाभी' को कहा कि बहुत भूख लगी है, जल्दी खाना परोस दो।

भाभी ने मजाक में ही कहा कि इतने उतावले हो रहे हो खाने को, क्या उसके बाद सोमनाथ मंदिर की रक्षा में क्या लड़ने जा रहे हो? अनभिज्ञ हमीर जी ने भाभी से पूछा कि सोमनाथ मंदिर पर क्या संकट है? तब भाभी ने पूरी बात बताई। हमीर की रजपूती जाग उठी थी, उन्होंने कहा, 'कोई लड़े या न लड़े मैं सोमनाथ भगवान के रक्षार्थ जाऊंगा।' उधर जफर खां की सेना सोमनाथ की ओर बढ़ रही थी। इधर हमीर जी अपने दौ सो साथियों के साथ सोमनाथ को कूच कर चले। रास्ते में गिरनार के जंगलों में बंगड़ा भील से मुलाकात होती है जो जूनागढ के राजा के अधीन था तथा सोमनाथ पर अपना हक मानता था। बेगड़ा ने हजारों तीर कमान वाले सैनिकों को तैयार कर हमीर जी का साथ देने का प्रण किया। जेठवा राजपूत की कन्या को बेगड़ा भील ने पुत्रीवत राजकुमारी की तरह पाला था, उससे चारण माताजी के वचन अनुसार हमीर ने शादी की एवं अपने गन्तव्य को चल पड़े। राजपूत, चारण, काठी दरबार, हीर मेर, भखाड़ी, रबारी आदि जाति के वीर जन हमीर के नेतृत्व में जफर खां एवं दिल्ली से आ रही मुस्लिम सेना से लोहा लेने को आतुर थे। बेगड़ा के नेतृत्व में तीरकमान से लैस सेना ने मंदिर के परकोटे के बाहर लड़ते हुए त्राहि-त्राहि मचा दी। मुस्लिम तोपची तीरों के आगे चित्कार कर मरने लगे। इस युद्ध में बेगड़ा काम आया। परन्तु हमीर जी ने गढ मंदिर में नौ दिन तक सेना को घुसने नहीं दिया, उनके अनेक यौद्धा काम आ गए। अन्त में ग्यारहवें दिन भगवान सोमनाथ को जल अर्पित कर हमीर समरांगण में आ डटे। गढ के दरवाजे खोल दिए गए एवं वीर शाका करने को चले। हमीर जी की तलवार गजब वार कर रही थी। उनका सिर कट गया परन्तु धड़ मलेच्छो की गर्दनें काटता जा रहा था। चारण मां ने युद्ध क्षेत्र में हमीर गोहील के मरसिये गाए। अतुलनीय रजपूती दिखा हमीर जी का सपना पूर्ण हुआ। सोमनाथ मंदिर के बाहर प्रांगण में शिवलिंग के एक दम सामने हमीर जी की अश्वारूढ प्रतिमा है तथा परकोटे के बाहर बेगड़ा भील की मूर्ति उनकी वीरता का प्रतीक है। वैशाख शुक्ल नवमी वीर हमीर का बलिदान दिवस है लोग उन्हें अपना आदर्श मानकर पूजते हैं।

वेलो आव्यो वीर,
सबाते सौमैया तणी।
हीलोणवा हमीर,
भालानी अणिये भीमाऊत।।

संघप्रमुख श्री पहुंचे सांत्वना देने

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नरेंद्र सिंह जसोल की माताजी का देहांत हो जाने पर अपने बाड़मेर प्रवास के दौरान 20 मई को माननीय संघप्रमुख श्री जसोल पहुंचे एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त की।

'बिंजासी में मृत्युभोज बंद करने का निर्णय'

सीकर जिले के बिजासी गांव के राजपूतों ने लोकडाउन के दौरान 17 मई को एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। सोशल डिस्टेसिंग का पालन करते हुए एक बैठक रखी गई और गांव में राजपूत परिवारों में मृत्युभोज नहीं करने का प्रस्ताव रखा गया। सभी ने सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव का स्वागत किया एवं आगे से गांव में ऐसा न करने का निर्णय लिया गया।

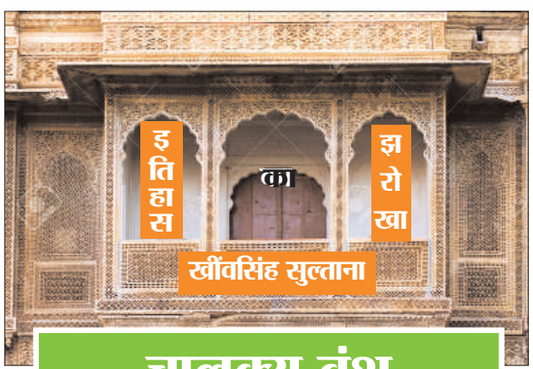

चालुक्य वंश

नरसिंह वर्मन (पल्लव शासक) से युद्ध में पराजय और पुलकेशिन द्वितीय के वीरगति को प्राप्त होने से चालुक्य राज्य में अव्यवस्था फैल गई। राजधानी वातापी पर पल्लवों का अधिकार हो गया, उनके सामन्तों ने स्वतंत्र शासकों की भांति आचरण करना शुरू कर दिया। यह अव्यवस्था की स्थिति पुलकेशिन की मृत्यु से 655 ई. तक रही। इस अव्यवस्था का अंत पुलकेशिन के एक सुयोग्य पुत्र विक्रमादित्य प्रथम ने किया था, इस कार्य में उसे अपने नाना दुर्विनीत (गंग शासक) से सहयोग मिला। विक्रमादित्य ने सैन्य बल एकत्र कर राजधानी वातापी पर आक्रमण कर पल्लव नरसिंह वर्मन को परास्त कर उसे भागने के लिए मजबूर कर दिया। इसके बाद उसने एक-एक कर सभी विद्रोही सामन्तों को परास्त कर अपने पैतृक राज्यों में एकता स्थापित की, उसने छिन्न-भिन्न चालुक्य राज्य को पुनः सुगठित, सुदृढ़ साम्राज्य में बदल दिया। उसके छोटे भाई जयसिंह ने जिसे उसने बाद में दक्षिण गुजरात का शासक बनाया, उसकी पूरी सहायता की। अपने राज्य को व्यवस्थित करने के बाद विक्रमादित्य ने पल्लव राज्य पर आक्रमण किया, उसने अपने समकालीन पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन द्वितीय को परास्त कर राजधानी कांची पर अधिकार कर लिया। गढवाल लेख से पता चलता है कि पल्लवों पर विजय के बाद उसने पाण्डय, चोल, केरल, कलक आदि पर भी विजय प्राप्त की। वह अपने पिता का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध हुआ। विक्रमादित्य की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विनयदित्य 681 ई. में शासक बना। उसके शासन काल में भी पल्लव-चालुक्य संघर्ष चलता रहा। चालुक्य लेखों में उसे पल्लव, कलभ्र, हैहय, मालव, पाण्ड्य आदि को परास्त करने का श्रेय दिया गया है। उसने अनेक उपाधियां धारण की, उसके अनेक लेख मिलते हैं जिनसे ज्ञात होता है कि उसके राज्य में सुख, शांति, समृद्धि थी। वह प्रजा की समस्याओं में व्यक्तिगत रूचि लेता था। विनयादित्य की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विजयादित्य 696 ई. में शासक बना। विजयादित्य ने लंबे समय तक शासन किया। उसके शासनकाल में अधिकतर समय शांति बनी रही जिसके कारण उसे स्थापत्य कला के विकास का अवसर मिला, उसके अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया। विजयादित्य के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य द्वितीय 733 ई. में शासक बना। उसके शासक बनते ही उसके राज्य पर अरबों का आक्रमण हुआ। नौसारी अभिलेख के अनुसार विक्रमादित्य के एक सेनापति पुलकेशिन ने अरबों के इस आक्रमण का सामना किया और उन्हें परास्त कर दिया। विक्रमादित्य द्वितीय के समय पल्लव-चालुक्य संघर्ष पुनः प्रारम्भ हो गया। उसने पल्लव नरेश नन्दिबर्मन द्वितीय को परास्त कर उसकी राजधानी कांची पर अधिकार कर कांची गोड की उपाधि धारण की। उसने सुदूर दक्षिण तक के शासकों को परास्त किया। विक्रमादित्य द्वितीय के बाद उसका उसका पुत्र कीर्तिवर्मन द्वितीय 745 ई. में शासक बना। कीर्तिवर्मन के शासन काल के अंतिम वर्षों में चालुक्य शक्ति निर्बल पड़ने लग गई। इस समय मान्यखेत के राष्ट्रकूटों की शक्ति का उदय हो रहा था।

राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग ने चालुक्य विरोधी संघ बनाकर चालुक्यों के राज्य का प्रदेश उससे छीन लिया। कीर्तिवर्मन ने पुनः अपना राज्य प्राप्त करने का प्रयास किया किन्तु दन्तिदुर्ग के पुत्र कृष्ण तृतीय ने उसे परास्त कर दिया। कीर्तिवर्मन युद्धक्षेत्र में मारा गया तथा चालुक्य राज्य पर राष्ट्रकूटों का अधिकार हो गया। वातापी के चालुक्यों ने लगभग दो शताब्दियों तक दक्षिणपथ पर शासन किया। चालुक्य वंश के शक्तिशाली शासकों ने विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, उनके शासनकाल में कला, साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। वातापी, ऐहोल और पतड़कल में चालुक्य काल में अनेक सुन्दर मंदिरों का निर्माण हुआ। **(क्रमशः)**

टेक्नोक्रेट्स की ऑनलाईन बैठक

हमारे समाज के अनेक लोग टेक्नीकल क्षेत्र में अच्छे पदों पर कार्यरत है और हजारों विद्यार्थी प्रतिवर्ष नए इंजीनियर भी बन रहे है। नए इंजीनियरिंग करने वाले नए लोगों को पूर्व में इंजीनियरिंग कर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत समाज बंधुओं से जोड़ा जाए तो उचित मार्गदर्शन के माध्यम से वे भी अच्छी नौकरी पा सकते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर वर्तमान में इंजीनियरिंग कॉलेज के व्याख्याताओं व आई.टी. क्षेत्र में पूर्व में काम कर रहे इंजीनियर्स के बीच एक ऑनलाईन बैठक 30 मई को आयोजित की गई। बैठक में व्याख्याताओं ने ऐसे विद्यार्थियों को चिह्नित करने का दायित्व लिया एवं इंजीनियर्स ने ऐसे विद्यार्थियों को मार्गदर्शन का दायित्व लिया। बैठक में नए इंजीनियर्स में अंग्रेजी में संवाद कला (कम्युनिकेशन स्किल) विकसित करने पर विशेष जोर दिया ताकि उन्हें काम पाने में विशेष दुविधा न हो। इसके लिए विद्यार्थियों के साथ वेबनार आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया। अभिभावकों के लिए भी ऐसे कार्यक्रम करने का निर्णय लिया गया। इस प्रकार का संवाद प्रतिमाह करने का भी निर्णय लिया गया। आज के संवाद में पवनसिंह बिखरणिया, नरेन्द्रसिंह छापरी, दीपेन्द्रसिंह पलाड़ा, देवराजसिंह, डॉ. अशोकसिंह शेखावत, राजेन्द्रसिंह शेखावत, गणपतसिंह मवड़ी, कुंदनसिंह सहित श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगियों ने भाग लिया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

संपादकीय

'आईए, एक पात्र को चूने'

9 मई को महाराणा प्रताप की जयंती के उपलक्ष में अपने ऑनलाईन उद्बोधन के दौरान संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने रामायण आदि सद्साहित्य पढ़ने की बात कहते हुए कहा कि हम रामायण का कोई एक सकारात्मक पात्र चुनें, उसे अपना आदर्श बनाएं और तद्नुकूल आचरण करने का प्रयास करें तो जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ सकते है। हमारे मन मस्तिष्क में प्रश्न उभर सकता हैं कि हम तो राम को आदर्श बनाना चाहते हैं, सभी लोग राम को आदर्श बनाना चाहते हैं तो फिर उन्होंने अलग-अलग पात्र चुनने को क्यों कहा? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने का प्रयास करेंगे तो हम पाएंगे कि लक्ष्मण के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास लक्ष्मण बनने में ही है। भरत भरत बनकर ही अपना जीवन लक्ष्य हासिल कर सकते हैं और शत्रुध्न की पूर्णता शत्रुध्न बनने में ही है। सुग्रीव के उत्साह का उपयोग सुग्रीव बने रहने में ही है, वे जामवन्त जैसे धीर गंभीर वृद्ध बनने का प्रयास करेंगे तो उनके स्वाभाविक विकास में बाधा ही उत्पन्न होगी। शबरी का विकास शबरी बनने में ही है और तारा की भूमिका तारा के रूप में ही जीवन सार की ओर बढ़ा सकती है। सीता को उर्मिला नहीं बनना चाहिए और उर्मिला को उर्मिला ही बने रहना चाहिए।

इसे और खोलकर समझना चाहें तो हमारे समझ में आएगा कि हर मनुष्य का अपना प्रकृति कृत स्वभाव होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करता है तो ही जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ता है। लक्ष्मण का स्वभाव यदि उग्र है उन्हें तुरन्त क्रोध आता है तो उन्हें अपने उस उग्र और क्रोधी स्वभाव के अनुसार ही राम के काज में अपनी भूमिका ढूंढनी चाहिए। यदि वे भरत बनने का प्रयास करेंगे तो लक्ष्मण भी नहीं रहेंगे और भरत भी नहीं बन पाएंगे। इसी प्रकार हमारा भी एक प्रकृति कृत स्वभाव है। हमारा वह स्वभाव विश्वात्मा की योजनानुसार निर्मित हुआ है। यदि हम उसी स्वभाव के अनुरूप विश्वात्मा के दृष्टिकोण से अपनी भूमिका ढूंढ़ेगे और तद्नुकूल आचरण करेंगे तो सृष्टि क्रम की स्वाभाविक गति में सहयोगी बनेंगे। लेकिन यदि इसके विपरीत हम प्रयत्न करेंगे तो सद्भावना होते हुए भी सद्कार्य नहीं कर पाएंगे, सद् सहयोग नहीं कर पाएंगे, सद्भूमिका नहीं निभा पाएंगे। हम अपने आपको पहचानने का प्रयास करें, क्या मेरा स्वभाव धीर गंभीर भक्त का है तो मैं भरत को चुनूं, क्या मेरा स्वभाव उग्र एवं प्रतिक्रियावादी है तो मैं लक्ष्मण को अपना आदर्श चुनूं और अपनी समस्त उग्रता और प्रतिक्रिया को राम के अधीन कर दूं। यदि मेरी रजशक्ति इतनी सक्रिय नहीं है तो मैं जामवंत की भूमिका अपनाऊं लेकिन यदि मेरे में उत्साह उछाल मार रहा है तो मैं अंगद या सुग्रीव की भूमिका का चयन करूं। इस सृष्टिक्रम में वह कोई भी भूमिका छोटी नहीं है जो विश्वात्मा के ताने बाने के अनुरूप होती है, इसलिए यदि पूरी रामायण में मेरी भूमिका जटायु जितनी छोटी हो और मेरी क्षमताएं जटायु जितनी ही हों तो मुझे जटायु की ही भूमिका चुननी चाहिए क्यों कि खोई हुई सीता को खोजने के लिए जटायु द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना और उसके द्वारा अपनी क्षमतानुसार किया गया संघर्ष भी कम वंदनीय नहीं है। इसलिए आएं हम अपने आपको पहचानने का प्रयास करें और तद्नुकूल अपनी भूमिका का चुनाव कर उसी में संलग्न होवें। परमेश्वर को प्रसन्न करने के उद्यम में सबसे बड़ा काम अपने स्वभाव को पहचानना ही होता है। हमारा प्रकृतिकृत स्वभाव हमें बरबस उसके अनुकूल कर्म में प्रवृत्त कर ही देता है, ऐसा भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है। इसलिए पहला काम ही अपने उस स्वभाव को पहचानना होता है क्योंकि विश्वात्मा के ताने-बाने में हमारी भूमिका उसी के अनुरूप सार्थक होती है। यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति की जो हमें अच्छा लगता है, नकल करना प्रारंभ कर देंगे तो हम हमारी स्वाभाविक प्रगति में बाधक ही बनेंगे। मोटे रूप में अनेक लोगों के स्वभाव में पाई जाने वाली सामान्य समानताओं के आधार पर समाज के वर्ग बनाए गए हैं इसलिए वर्ग, वर्ण, जातियां आदि अस्तित्व में आती हैं लेकिन व्यक्तिगत रूप से तो व्यक्ति भी एक इकाई होता है और उस इकाई का अपना स्वभाव होता है। भीम का अपना स्वभाव है तो युधिष्ठर का अपना स्वभाव है। हम अपने उस स्वभाव को समझें, जानें यह क्षमता हमारे अपने अंतरावलोकन से ही विकसित होती है और संघ हमें उसी अंतरावलोकन की क्षमता प्रदान करता है ताकि हम अपने आपको पहचान सकें और तद्नुकूल सकारात्मक सहयोग दे सकें। यहां यह भी विचारणीय है कि हमारे उस स्वभाव का हम उपयोग किस हेतु कर रहे हैं। दुशासन का भी भाई के प्रति समर्पण का स्वभाव था और सहदेव का भी। लेकिन दुशासन का वह समर्पण श्रेष्ठ नहीं बन पाया क्यों कि वह दुर्योधन जैसी नकारात्मक शक्ति के प्रति था। इसलिए सद्पात्र को चुनने की बात कही गई है। हम आए, संघ में, अंतरावलोकन करना सीखें, अपने आपको जानें और तद्नुकूल कर्मशील होवें। यहीं हमारे विकास का मार्ग है।

खरी-खरी

पुराना नारा, फिर से उभरा पर ऐतराज क्यों?

विगत दिनों प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र के नाम अपने लाईव संदेश में आत्मनिर्भर भारत की बात की। अपने पूरे संबोधन का एक बड़ा भाग उन्होंने इसी पर बिताया एवं आत्म निर्भरता के फायदे गिनाए। आज यदि हम आम भारतीय से पूछें तो कौन नहीं चाहता कि भारत आत्मनिर्भर न हो? कौन भारतीय नहीं चाहता है कि भारत का डंका पूरे संसार में बजता रहे? कौन भारतीय नहीं चाहता कि भारत को किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े, इसलिए प्रधानमंत्री जी की बात पर किसको ऐतराज हो सकता है? किसको असहमति हो सकती है? लेकिन फिर भी ऐतराज हुआ, विभिन्न वक्तव्य प्रधानमंत्री जी के वक्तव्य पर व्यंग्य करते हुए जारी किए गए। सोशल मीडिया में भी ऐसे ही व्यंग्य तैरते नजर आए। तब बात विचारणीय हो जाती है कि यह ऐतराज क्यों? भारत को आत्मनिर्भर बनाने की बात पर ऐतराज क्यों? भारत को संसार भर में 'डंका बजाने लायक बनाने की बात पर ऐतराज क्यों?' तो उत्तर भी निकल कर आता है और वह यह कि इस प्रकार के नारे विगत लंबे समय से अनगिनत बार सुनने को मिले हैं। इसलिए लोग मानते हैं कि पुराना नारा ही एक नए कलेवर में फिर से उभर कर आया है। भारत भारत में बनीं चीजों का उपयोग करे यह नारा आज का नहीं है। स्वयं प्रधानमंत्री एवं उनसे संबंध लोग वर्षों से यह नारा लगाते आ रहे हैं। इसका प्रमाण यह है कि ज्यों ही प्रधानमंत्री जी ने टेलीविजन पर आत्म निर्भरता की बात की, दूसरे ही दिन सोशल मीडिया में वे स्वदेशी और विदेशी बंटवारे वाली वे सूचियां तैरने लगी जो 6-7 वर्ष पहले तैरा करती थीं। कौनसी कंपनी स्वदेशी है और कौनसी विदेशी, यह बताया जाने लगा। तब लगता है कि पुराना नारा फिर से उभरा है और क्यों कि नारा तो केवल नारा है, लोगों का ध्यान आकर्षित करने का माध्यम है और जो बात लोगों का केवल ध्यान आकर्षित करने के लिए होती है उस पर ऐतराज होना स्वाभाविक है? लोगों का प्रश्न होना स्वाभाविक है कि आप आज फिर से पुराना नारा नए कलेवर में दे रहे हो तो अब तक विगत 6 वर्षों में इस नारे को लागू करने से आपको किसने रोका है? आप तो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए चटाइयां भी चीन से मंगा रहे थे, तो फिर आपके उस नारे का क्या जो आप वर्षों से लगा रहे थे? तब आशंका निश्चित रूप से खड़ी होती है कि क्या गारंटी है कि आपकी यह बात भी नारा साबित नहीं होगी? अब तक विगत छह वर्षों में ऐसे कितने नारे लगाए गए, उनमें से कितनी बातें मात्र नारा नहीं रही? अतः अपने प्रधानमंत्री जी पर पूरा विश्वास जताने के प्रबल प्रयास के बाद भी मन के किसी कौने में आशंका पैदा हो ही जाती है कि कहीं पुराना नारा ही फिर से नहीं उभरा है? लेकिन उसके बावजूद प्रधानमंत्री जी। भारत का आम नागरिक आज भी उपलब्ध राजनेताओं में आप पर अधिक विश्वास करता है और इसलिए अब आपसे अपेक्षा भी करता है कि नारे अब धरातल पर उतरें और आफत को अवसर में बदलने की बात चरितार्थ हो।

कोरोना काल में सेवा का संकल्प

जोधपुर के नांदड़ी क्षेत्र में निवासरत प्रतापसिंह सोढ़ा ने कोरोना काल में सेवा का प्रेरणादायी संकल्प लिया। उन्होंने 24 मार्च को लाकडाउन प्रारम्भ होने से ही जरूरतमंदों को भोजन कराने का संकल्प लिया। उन्होंने जोधपुर-जयपुर हाईवे पर बनाड़ के निकट अस्थायी भोजनशाला प्रारम्भ की। प्रतिदिन उस सड़क से गुजरने वाले जरूरतमंद लोगों को भोजन करवाना प्रारम्भ किया। इस प्रकार 24 मार्च से समाचार लिखे जाने तक प्रतिदिन 500 से अधिक लोगों को भोजन करवा रहे हैं। इस काम में वे अब तक 20 लाख से अधिक रूपए खर्च कर चुके हैं। प्रतापसिंह मूलतः पाकिस्तान के रहने वाले हैं, जोधपुर में बनाड़ क्षेत्र में स्वयं मकान बनाकर बेचते हैं व भवन निर्माण के ठेके लेते हैं। सेवा के इस कार्य में जब पैसे की जरूरत पड़ी तो उन्होंने अपने द्वारा बनाया गया एक मकान बेचकर राशि की व्यवस्था की। वे जोधपुर में रहने वाले पाकिस्तानी शरणार्थियों के सहयोगी के रूप में भी सदैव तत्पर रहते हैं। प्रतिवर्ष रामदेवरा जाने वाले जातरूओं के लिए भी निःशुल्क भंडारे की व्यवस्था करते हैं। प्रतापसिंह संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नरपतसिंह चिराणा के रिश्ते में दोहिते लगते हैं।

सोशल मीडिया वास्तविक कुरुक्षेत्र नहीं है:

(हमारे समाज के एक प्रशासनिक अधिकारी ने सोशल मीडिया में हाल ही की क्रिया प्रतिक्रिया से व्यथित हो एक लेख प्रेषित किया है, जो हमारे लिए विचारणीय एवं आचरणीय है।)

पिछले कुछ दिनों से देखा जा रहा है कि सोशल मीडिया पर हमारे देश के महापुरुषों के स्वामित्व को लेकर गलत दावे किए गए, उनको राष्ट्रीय से जातीय बनाने की कोशिशें हो रही हैं। पर इसका जवाब थोड़ा सा अजीब था - जवाब में हमारे समाज के युवाओं ने भी एक वर्चुअल युद्ध जैसा माहौल बना दिया। एक अखबार के दावे के अनुसार पृथ्वीराज के स्वामित्व को लेकर ट्विटर पर जो युद्ध हुआ वो हमारे युवाओं ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी से एक लाख से ज्यादा मतों से जीत प्राप्त की। लेकिन अब मुझे अगले वर्ष की 19 मई की चिंता हो गयी है। क्योंकि यह युद्ध तो अब हर साल लड़ा जायेगा। 19 मई से 10 दिन पहले ही सब युवा अपने -अपने अस्त्र - शस्त्र (इंटरनेट , मोबाइल और ट्विटर) चमकाएंगे, उनकी धार तेज करेंगे और हो सकता है कि इतनी तैयारी के बावजूद भी हम लोग हजार - दो हजार मतों से हार जाएं। अगर हम हार गए तो क्या हम पृथ्वीराज चौहान पर अपना दावा छोड़ देंगे। अभी हाल ही में हम जीते हैं (हालांकि मैं इसे जीत नहीं मानता बल्कि एक बचकानी हरकत मानता हूं) तो क्या सामने वाले पक्ष ने अपना दावा छोड़ दिया है। कुल मिलाकर अब बाजी हमारे हाथ में नहीं रही। पृथ्वीराज चौहान की जाति और उनका वंश हमारे हाथ से निकल कर ट्विटर और एक अखबार के हाथ में चला गया है। अब हर साल पृथ्वीराज की जाति बदलेगी। तराइन के प्रथम और द्वितीय युद्ध की तरह वो कभी हारेंगे और कभी जीतेंगे।

लेकिन हम सिर्फ मीडिया को दोषी मानकर अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते। मीडिया का काम है विवाद ढूंढना और उनको हवा देना। जिस तरह आजादी के समय कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाकर हमने उसका अंतर्राष्ट्रीयकरण कर दिया था वैसे ही पृथ्वीराज को हमने सोशल मीडिया के हाथों की कठपुतली बना दिया और पुरे मुद्दे को विवादास्पद बना दिया। कुछ वर्षों पहले तक हमें कभी सोचने की जरुरत ही नहीं पड़ी कि पृथवीराज किस जाति से हैं? पूरे देश का जनमानस उन्हें दिल्ली का अंतिम हिन्दू सम्राट ही मानकर एक राष्ट्रीय चरित्र के रूप में नमन करता था लेकिन अभी पिछले कुछेक वर्षों में एक रणनीति के तहत लोग उनकी जाति की बात करने लगे। उनको अपनी जाति का बताने लगे। सार्वजनिक मंचों पर निराधार बयानबाजी करने लगे। तब हमारे समाज के युवाओं को शायद एक तरह से मानसिक असुरक्षा की भावना अनुभव हुई और वो भी पृथ्वीराज हमारा है, हमारा है यह अलग- अलग प्लेटफॉर्म्स पर उद्घोषित करने लगे। अरे जो पहले से ही आपका है (वैसे तो पूरे भारतवर्ष के हैं) उसको चिल्ला-चिल्ला कर कहने की कहां जरुरत है। जब हमने चिल्लाना शुरू किया तब जो अब तक तटस्थ थे वो भी सोच में पड़ गए। वो तो पहले से ही हमारा मान रहे थे। पर हमारी चिल्लाहट ने उनका ध्यान भंग किया। उनको भी एक बार तो लगा कि दाल में कुछ काला है। कुल मिलाकर जब तक हमने अन्य समाज के छूट भय्यै नेताओ पर ध्यान नहीं दिया तब तक अन्य समाजों ने भी ध्यान नहीं दिया। पर जब हमने प्रत्युतर देना शुरू किया तो बाकी लोगों ने भी मामले को गंभीरता से फॉलो करना शुरू कर दिया। अन्य सभी समाजो की तरह राजपूत और गुर्जर समाज भी हजारो सालो से एक साथ रह रहे हैं और बहुत सारे विवादों के बावजूद भी रहते रहेंगे। सोशल मीडिया पर जो भी युवा हैं वो ना तो सारे राजपूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और ना हीं सारे गुर्जरों का। पर आजकल हर समाज में कुछ ऐसे नेता पैदा हो रहे हैं जो सार्वजानिक जीवन में बिना सेवा और परिश्रम किए रातों-रात सितारा हैसियत पाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को ऐसे मुद्दे चाहिये जो जनता का ध्यान बड़ी आसानी से आकर्षित कर सकें। संक्षेप में कुछ लोगों के राजनीतिक उद्देश्य भी हो सकते हैं। ऐसे लोगों को अपनी जाति और बिरादरी में अपनी राजनीतिक पहचान का लोभ भी हो सकता है। कोढ़ में खाज वाली बात यह है कि ऐसे लोगों को देश के कुछ पृथक्कतावादी और भृष्ट बौद्धिक वर्ग (तथाकथित वामवादी विचारक) का नैतिक और बौद्धिक समर्थन भी मिल जाता है जो कि आग में घी का काम करता है। कुछ प्रायोजित टी.वी. समाचार चैनल भी इस आग को हवा देते हैं। कुछ लोगो की सुनियोजित सोच और हमारे युवाओं की प्रतिक्रिया से एक महान व्यक्तित्व का वंश दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से विवादस्पद हो गया।

खैर जो होना था वो हो गया। पर मेरा मत है कि अब लड़ाई का तरीका बदलना होगा। सिर्फ सोशल मीडिया पर जाकर तलवार भांजना धूल में लठ मारने से ज्यादा कुछ नहीं। वहां तार्किक बातें कम और गाली-गलौच ज्यादा होती हैं। कितने युवा है जिन्होंने कर्नल टॉड की राजस्थान इतिहास पर पुस्तकों को पढ़ा है? कितने लोग है जिन्होंने हमारे महापुरुषों पर बेहतरीन वीडियो बनाए हैं? कितने युवा हैं जिनका उद्देश्य बाप्पा रावल और राजा मिहिर भोज पर दिल्ली विश्वविद्यालय या जे.एन.यू से पी.एच.डी. करना है? कितने लोग तैयार हैं जो छठी शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक के राजपूत शासकों पर किसी ढंग की यूनिवर्सिटी में रिसर्च पेपर छपवाना चाहते हैं? हकीकत यह है कि यह सब मेहनत के काम है और हम सिर्फ फ्री में (सोशल मीडिया की लफ्फाजी) अपनी ऐतिहासिक जमीन को किसी के अतिक्रमण से बचाना चाहते हैं। अब पीढ़ियां बदल गयी हैं। पुराने जमाने के लोग हमसे प्रमाण नहीं मांगते थे क्योंकि समाज में सबका काम विभाजित था और शत्रु से लड़ने का काम हमारे हिस्से आया था। जो चरवाहे और खेती का काम करते थे उनको पता होता था कि लड़ने-भिड़ने का काम करने वाले कौन हैं। पर आज की पीढ़ी पढ़ी-लिखी है और कुछ ज्यादा ही पढ़ गई है तो वो भावनाओं से ज्यादा तर्क की बात करती है। उनको कुतर्क भी तर्क लगता है। वो पहले अपनी राय बनाते हैं और फिर उसको सही प्रमाणित करने की कोशिश करते हैं। उन्होंने पहले राय बनाई कि गुर्जर शब्द को स्थान नहीं मानना है उसे येन-केन-प्रकारेण एक जाति के रूप में ही प्रमाणित करना है। वो लोग अगर कोई भी शोध करेंगे तो भी तटस्थ रूप से विवेचना करने की बजाये अपने पूर्वाग्रह को ही महत्व देंगे। ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त युवा से आप सोशल मीडिया पर कितनी ही बहस कर लो उसकी धारणा को बदलना मुश्किल है। उसकी ऐसी धारणा का एक कारण यह भी है कि जब उसने इस दुनिया को देखा तब उसे अपने परिवार में सब लोग गुर्जर सरनेम वाले लोग ही मिले ना कि गुज्जर वाले।

कई विचारकों का कहना है कि - समाज चाहे यूरोपीय हो या भारतीय, सैनिक वर्ग की जीवन-शैली और उनके योद्धा सबको आकर्षित करते हैं। जब समाज राजतंत्र से लोकतंत्र में परिवर्तित होता है तब दो तरह की बातें होती हैं। पहली- पुराने शासन तंत्र में कमियां बताई जाती हैं और दूसरी- नए शासन तंत्र को लाने वालों का सम्मान किया जाता है। यूरोप में भी लोगों ने पुराने शासन तंत्र की कमियां बतायी पर प्रतीकातमक रूप से पुराने शासकों का भी सम्मान किया क्योंकि उनका मानना था कि हर शासन प्रणाली में शासक अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है और बाहरी हमलों का सामना करने की प्रक्रिया में बहुत कुछ खोता भी है। इसीलिए अधिकांश यूरोपीय देशों में लोकतंत्र के साथ-साथ अतीत की विरासत के रूप में उन्होंने राजा और रानी का पद भी निरंतर बनाए रखा। हमारे यहां बिलकुल उल्टा हुआ। जो वर्ग राजतंत्र को लोकतंत्र में परिवर्तित करने में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहा था उसके मन में कई तरह के विरोधाभासी स्वार्थ थे। चूंकि यह वर्ग राजतंत्र में भी लाभदायक स्थिति में था और कई मामलों में तो राजा से भी ज्यादा लाभ का भागीदार था (इसे युद्ध नहीं लड़ना पड़ता था) इसलिए उसे अपना दामन साफ करना था क्योंकि उसके दामन पर राजा से ज्यादा धब्बे थे। दूसरा उसे नई शासन व्यवस्था (लोकतंत्र) में महत्वपूर्ण पद भी लेने थे (बिना पदों के यह ज्यादा दिन जीवित नहीं रह सकता) इसलिए इसने समाचार पत्रों और सिनेमा तथा साहित्य के माध्यम से पुराने शासकों को रावण और उनके शासन तंत्र को नरक बताने में कोई कौर कसर नहीं छोड़ी। लेकिन प्रथम चुनाव तक जनता के मन की श्रद्धा पुराने शासन और शासकों के प्रति पूरी तरह समाप्त नहीं हुई तो इस वर्ग ने अपना कुप्रचार (एक झूंठ को 100 बार बोलो तो वो सच बन जाता है) और तीव्र कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि यहां पर ना केवल पुराने शासकों के प्रति बल्कि अपना सब कुछ बलिदान करने वाले सैनिक वर्ग के प्रति भी नफरत पैदा कर दी गई। जब राजाओ से विलय पत्र पर हस्ताक्षर करवाए तब प्रिवीपर्स (प्रतीक) बनाए रखने की बात थी। पर बाद में इन प्रतीकों को भी योजनाबद्ध तरीके से खत्म कर दिया। 1940 से 1960 के मध्य जो सबसे बड़ी साजिश हुई वो यह थी कि राजाओं के उत्तराधिकारियों को योजनाबद्ध तरीके से विदेश पढ़ने भेज दिया गया ताकि वो लोकतान्त्रिक प्रणाली में चुनाव ना लड़े और सैनिक वर्ग को इंडियन आर्मी में जाना पड़ा। पढ़ा-लिखा राजकुमार लोकतंत्र और चुनाव से दूर रहे और सामान्य सैनिक पढाई-लिखाई से। नतीजा यह हुआ कि हम लोग राजनीति, प्रशासन और अन्य समाजों से (झूंठी नफरत की वजह से) दूर होते गए। यह एक तरह का हमारा पृथक्करण था। (हालांकि मैं व्यक्तिगत रूप से इस तरह की तथाकथित 'संगठित साजिश' के सिद्धांत से बहुत ज्यादा सहमत नहीं हूं। क्योंकि इस तरह के सिद्धांतों में विश्वास करने से हम अपनी सोच,समझ और जिम्मेदारियों से बचने का एक व्यर्थ प्रयास करते हैं और इस से समाज में बहुत ज्यादा नकारात्मकता फैलती है जो ना हमारे लिए हितकर है और ना समाज के लिए)।

ऊपर आजादी के समय का जो घटनाक्रम बताया गया है उसका उद्देश्य सिर्फ यह बताना था कि आप शिक्षित और जाग्रत नहीं थे (अब भी नहीं हो) इसलिए बहुत नुकसान हुआ। पर जो भी हुआ दुर्भाग्यपूर्ण था। हमको किसी भी वर्ग को अपने पतन के लिए जिम्मेदार मानकर ना तो द्वेष करना है और ना ही नफरत। क्योंकि किसी दूसरे पर जलता हुआ कोयला फेंकने वाला सबसे पहले अपना हाथ खुद जलाता है। थोड़ा बहुत तो अन्य सवर्णों को भी झेलना पड़ा। विप्र समाज के बारे में भी बहुत नकारात्मक बातें फैलाई गई और वणिक वर्ग को भी बहुत गालियां पड़ी। पर उन लोगो ने बहुत संयम और समझदारी के साथ काम लिया। वो लोग हर किसी से सोशल मीडिया या चौराहे पर जाकर लड़ते नहीं हैं। अपनी प्रगति पर ध्यान देते हैं। चुपचाप जनभावनाओं के साथ तैरते-तैरते उनके नेता तक भी बन जाते हैं और हम तो जनभावनाओं को अब तक भी ना समझ पाए हैं और ना पकड़ पाए हैं चूंकि 1950 के बाद पुराने शासक वर्ग और सैनिक वर्ग को तो खत्म किया जा सकता है पर 1950 से पहले के हजारों सालो के इतिहास को तो नहीं। एक गरीब आदमी अक्कड़ कर चले और अपने इतिहास का गौरव गान करे यह भला किसको अच्छा लगे। शुरू में तो अन्य वर्गों ने पुराने सैनिक वर्ग की जीवन शैली और उनके सरनेम को फॉलो किया। लेकिन इस से भी कई उद्देश्य पूरे नहीं हुए तो फिर महापुरुषों की जाति को परिवर्तित कर उन्हें हिन्दू से पिछड़ा बनाने की कोशिशे हुईं।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सोशल मीडिया वास्तविक कुरुक्षेत्र नहीं है:

(पृष्ठ पांच से लगातार)

मजेदार बात यह थी कि सैनिक वर्ग से घृणा करने वाले लोग ना केवल सैनिक वर्ग की तरह दिखना चाहते है बल्कि उनके इतिहास और महापुरुषों पर भी अपना दावा करने लग जाते हैं। हम लोगो को इतने दिन लगता था कि सिर्फ वामपंथी विचारक ही हमारे इतिहास को विकृत बनाने की कोशिश कर रहे हैं पर सच्चाई यह है कि दक्षिण पंथी (तथाकथित राष्ट्रवादी) भी एक खेल-खेल रहे हैं। पहले उन्होंने पिछडो को क्षत्रिय बनाने की कोशिश की। राजा मानसिंह (हिन्दू धर्मो के प्रतीकों की रक्षा करने वाले) और जयचंद राठौड़ (जिनका पृथ्वीराज के पतन में कोई योगदान नहीं था) को विलेन बनाया और फिर उनकी अपेक्षाए और बढ़ गईं।

(उनकी पार्टी के नेताओं ने तो कई क्षत्रिय राजाओ को गुर्जर बताकर मूर्तियों का शिलान्यास भी कर दिया भले ही राजनीतिक मजबूरी के नाते किया हो)। राष्ट्रवादियों का मानना है कि हम (क्षत्रिय) इतने सारे ऐतिहासिक महापुरुष लेकर क्या करेंगे? इनमे से कुछ तथाकथित पिछड़े वर्गों (जो कि उनका वोट बैंक है) को दे दें तो उनका भी कल्याण हो जाएगा। उनका क्षत्रियत्व भी सिद्ध हो जाएगा। क्योंकि उनको पिछड़ा होने का फायदा तो आरक्षण के रूप में मिल चुका है इसलिए अब पिछड़ा होने से कोई फायदा नहीं। राष्ट्रवादी प्राचीन और मध्यकाल में तो हिन्दू धर्म की रक्षा के नाम पर हमसे बलिदान मांगते थे अब हिन्दुतव (एक राजनीतिक एजेंडा) के नाम पर हमसे श्री कृष्णा, राजा मिहिर भोज और पृथ्वीराज चौहान मांग रहे हैं, क्योंकि उनको लगता है कि हमारे पास जरुरत से ज्यादा ऐतिहासिक महापुरुष या योद्धा हैं अगर कुछ दे देंगे तो हम (क्षत्रिय) तो गरीब होने से रहे पर सबको बांटने से समाजवाद जरूर आ जाएगा।

वो भूल गए कि जागीरें और रियासतें बची होतीं तो आपको सहर्ष दे दे देते पर अपने बाप-दादा और पूर्वजों को तो नहीं बांट सकते। क्षमा करें!

खैर जिसको जो एजेंडा चलाना है वो चलाए। मेरा सिर्फ इतना कहना है कि सिर्फ ट्विटर और फेसबुक की लड़ाइयों को जीतकर हमें अपने आपको सिकंदर नहीं मानना है। आप जिस जिस माध्यम की यह कहकर आलोचना करते हो कि वो लोग हमारे प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त है- उस उस माध्यम पर कब्जा करो। अपने आपको इतना योग्य बनाओ कि वो माध्यम आपको लेने के लिए मजबूर हो जाए। आप लोग सबसे ज्यादा बॉलीवुड की आलोचना करते हो और एक हद तक यह बात ठीक भी है पर क्या आपने में से किसी ने बॉलीवुड में डायरेक्टर और राइटर बनाने की कोशिश की। अब यह मत कहना की वो नाचने और गाने वाले भांडो का काम है। अगर आप यह बोल रहे हो तो यह सिर्फ पलायनवाद है। आप रोमिला थापर, इरफान हबीब और अन्य इतिहासकारों की आलोचना करते हो और उनके संस्थानों को भी अपना निशाना बनाते हो पर आप खुद भी तो मेहनत करके इतिहास के शोधार्थी बन सकते हो, जे.एन.यू. में प्रोफेसर बन सकते हो। अब यह मत कहना की वहां आरक्षण है, नहीं तो यह भी पलायन वाद होगा। आप पूरे संसार से कटकर इसको कभी नहीं बदल सकते। जो भी समाज की मुख्य धारा में प्रचलन में है उसमे स्थान बनाकर ही कुछ कर सकते हो। अपने रॉयल स्टेटस के अहंकार के सिंहासन से थोड़ा नीचे उत्तर कर देखिए। राजा हरिश्चंद्र ने राजा होकर भी एक दलित व्यक्ति की सेवा की और आप लोग दलितों से सोशल मीडिया पर गाली-गलौच करते हो और बदले में यह उम्मीद करते हो कि वो आपको बन्ना सा कहकर सम्बोधित करें। लोकतंत्र और संविधान ने उसको अधिकार दिया है पर आपका कुछ छिना नहीं है। आजादी से पहले आप सिर्फ सैनिक थे, अब तो सैनिक के अलावा कुछ और भी बन सकते हो - डॉक्टर , प्रोफेसर, प्रशासक, राजनेता, साहित्यकार, खिलाड़ी, बिजनसमैन पर इतने विलल्प होने के बावजूद भी आप सैनिक ही होना चाहते हो तो आपको कोई रोक नहीं सकता। पर सवाल यह है की हर व्यवस्था में आप सैनिक ही क्यों होना चाहते हो। कभी आर्मी के सैनिक, कभी पैरामिलिटरी और पुलिस के सैनिक और कुछ नहीं तो हमारे समाज की सेनाओं के सैनिक। याद कीजिये राज-ऋषि भी एक परम्परा थी। राजा भी होता था और ऋषि भी जैसे कि राजा जनक, राणा कुम्भा। पर आप सिर्फ राजा या राजा जैसा तो होना चाहते है पर विद्वान होना आपको तुच्छ लगता है और इसी वजह से आज हम बहुत सारे मामलों में जाने-अनजाने में तुच्छता की ओर बढ़ रहे हैं। तुच्छता की और बढ़ता आदमी कुछ ना होते हुए भी अपने अहंकार भाव से ग्रस्त रहता है और किसी का भी सम्मान नहीं करना चाहता। दूसरों से जरूर अपेक्षा रखता है। इस कारण और ज्यादा तुच्छ बनता जाता है, अंत में सब से यहाँ तक कि पूरे समाज से कटकर एक दिन गायब हो जाता है।

आश्चर्य की बात है कि हम जब तक राजतंत्र में थे, सबको साथ लेकर चलते थे और तब तक ही हमारा सम्मान था (महाराणा प्रताप ने तो भीलों, अफगानों और जैन लोगो को भी अपने साथ कर लिया था) पर लोकतंत्र जिसमें सबको साथ लेकर चलने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता- उसमे ना जाने क्यों सब से कट कर चल रहे है, हर जाति और धर्म का युवा आज की तारीख में पढ़ा-लिखा है, सक्षम है , स्वतंत्र सोच रखता है। आपको सबसे पहले उसको इंसान के नाम पर सम्मान देना पड़ेगा, उसके बाद उसकी योग्यता का भी सम्मान करना पड़ेगा। सम्मान एक तरफा प्रक्रिया नहीं है। वो देने पर ही मिलता है और समान मात्रा में। दूसरा आज ना तो छठी शताब्दी है और ना ही मध्यकाल है पर पता नहीं हमको लड़ना क्यों पसंद है। अगर लड़ ना पाए तो फिर विवाद तो जरूर करना है। हम जितना विवादों में उलझते रहेंगे उतना ही अपनी ऊर्जा का क्षय करते रहेंगे। हर विवाद एक ब्रेकर है जो कि आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने में बाधा पहुंचाता है। जो बीत गया वो इतिहास सिर्फ प्रेरणा लेने के लिए है पर वो कुबेर का खजाना नहीं है कि आप उसे ही खर्च करते रहोगे। उस पर परजीवी बनकर उसे खाते रहोगे। अपना इतिहास कब बनाओगे? याद करो कि आप में से राज्य, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल स्पधाओं में से अंतिम बार रजत या गोल्ड कौन लाया था? पदक की भी छोडो, पार्टिसिपेट भी किया था या नहीं। राज्य या राष्ट्रीय साहित्य अकादमी का पुरस्कार किसने जीता था? याद करो की हम में से युवा उद्यमी का जिला, राज्य या राष्ट्रीय स्टार पर किसी ने पुरस्कार जीता हो? अब यह मत कहना की व्यापार तो वणिक वर्ग का या वणिक वर्ती का तुच्छ कार्य है। कब तक दूसरे वर्गों की सफलताओं को खारिज करके अपने आपको बड़ा बनाने की कोशिश करोगे?

हम चाहते हैं कि 100 वर्ष पहले तक सिर्फ राजपूत होने के नाते जो सम्मान मिलता था वो अब भी मिले। पर आप लोग भूल रहे हैं वो सम्मान राजपूत के घर में जन्म लेने के कारण नहीं बल्कि एक सैनिक या क्षत्रिय का कर्तव्य निर्वहन के कारण मिलता था। यह समाज सम्मान देने में बहुत सोच विचार कर निर्णय लेता है। आज भी जो बॉर्डर पर शहीद होता है उसको तो सम्मान देता है पर उसके बच्चों को सिर्फ सहानभूति देता है। आप भूल जाओ की आपको बिना अपने आपको प्रमाणित किए सिर्फ एक जाति विशेष के घर में जन्म लेने के कारण मुफ्त में सम्मान मिल जाए। दूसरे वर्गों के लोगो की तो छोडो आपके घर वाले और रिश्तेदार भी आपको भाव नहीं देंगे। अपने समाज के किसी भी सफल व्यक्ति की सफलता का जश्न मनाने से पार नहीं पड़ेगी। आपके समाज का सफल व्यक्ति एक बार तो हो सकता है किसी सार्वजनिक मंच पर आपके हाथों से औपचारिकतावश साफा पहन ले पर जब दूसरी बार आप मिलने जाओगे तब आपका परिचय पूछने के साथ-साथ आप क्या हैं या क्या हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं- जरूर पूछेगा। अब यह मत कहना कि ऐसे व्यक्ति समाज द्रोही हैं या सच्चे राजपूत नहीं है। वो आपसे पूछने का अधिकार रखता है और आपकी सफलता के प्रयासों में सहायता करना उसका कर्तव्य भी है। आने वाला वक्त और भी जटिल और प्रतिस्पर्धी होगा। जिन वर्गों की राजनीति, अर्थव्यवस्था, प्रशासन और शिक्षा तथा रचनात्मक जगत (सिनेमा और साहित्य) में पकड़ बढ़ेगी उनको आपका इतिहास और अधिक आकर्षित करेगा। आपके महापुरुषों पर और अतिक्रमण बढेगा, आप उनको सिर्फ सोशल मीडिया की पोस्ट लिखकर और आपके विरुद्ध लिखी हुई पोस्ट पर कमेंट करके नहीं बचा पाएंगे। आपको उन सब संस्थाओं में घुसना पड़ेगा जिनसे आप नफरत करते है , आपको उन व्यवस्थाओं का अंग होना पड़ेगा जिनसे आप 'सोशल डिस्टैन्सिंग' बनाकर चलते है , और आपको विश्वास के साथ वहां भी कदम रखना होगा जिन संस्थाओ को अब तक आप अछूत मानते हैं। यह संस्थाए मीडिया, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, थिएटर, मंच, सिनेमा, टीवी, नेटफ्लिक्स, शोध संस्थान होंगे। पहले आप के अच्छे कार्यों का बखान दूसरे लोग करते थे पर अब तो वो खुद इस नयी व्यवस्था में अपना जीवन संघर्ष लड़ रहे हैं इसलिए अब पीड़ित भी आप ही हो और वकील भी आपको ही होना पड़ेगा। जो पीड़ित अपने केस खुद तैयार करता है वो ज्यादातर मामलों में जीत जाता है। वैसे भी आजकल आत्मनिर्भरता एक आंदोलन बन गयी है। आपको कोई भी काम करने के लिए ऐतिहासिक उदाहरण ही चाहिए। आपको भाषा और सम्बोधन भी ऐतिहासिक चाहिए। आप चाहते हैं कि आप को कोई मूर्छा से जगाने के लिए बोले, वो भी इस प्रकार बोले - 'हे, सूर्यवंशी कुलश्रेष्ठ। सूर्य भगवान आपके सिराहने आकर खड़े हो गए है (दोपहर के 12 बज गए हैं), हे, आर्य पुत्र आप किस तरह की सपनों की दुनिया (सोशल मीडिया) में विचरण कर रहे हैं, मैं आपका आह्वान करता हूं - हे ककुत्स्थ (इक्ष्वाकु वंशी) आप शीघ्रता से खड़े होकर एक बार सिर्फ सूर्य भगवान को अपने दर्शन दे दें ताकि सूर्य भगवान अपनी आगे की यात्रा कर सकें। अगर आप खड़े नहीं होंगे तो सूर्य भगवान ठहर जाएंगे और सम्पूर्ण जगत में अंधेरा छा जाएगा।' (अब आप पर निर्भर है कि आप किस बात को गंभीरता से लेते है या किसको व्यंग्य में) अंत में चलते-चलते एक गंभीर बात-समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर (वर्तमान राजनितिक और सामाजिक व्यवस्था में विश्वास रखते हुए) एक सामान्य मनुष्य (जागरूक नागरिक) की तरह आचरण करेंगे तो यह दुनिया और क्षत्रिय धर्म दोनों ज्यादा समझ में आएंगे। अपनी स्थितियों की विकटता स्पष्ट रूप से दिखाई देंगी। आंखों के आगे जो झूंठे आत्मगौरव का अतिश्योक्तिपूर्ण आवरण लगा रखा है वो जल्दी पिघलेगा। भविष्य की दशा और दिशा दोनों साफ दिखाई देंगे। आपका इतिहास और भविष्य दोनों का समाधान सिर्फ और सिर्फ वर्तमान में है। वर्तमान को तटस्थ होकर देखिये, मूल्यांकन कीजिए, उसमे जीने की कोशिश करे और शेष परमात्मा पर छोड़ दें।

स्वाधीन भारत के प्रथम कमांडर इन - चीफ फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा

कर्नाटक प्रदेश के दक्षिण - पश्चिम में कुर्ग जिला स्थित है। यहाँ की कोडवाज जाति जो जमींदार है, वह सैनिक समुदाय के रूप में पहचान रखती है। कर्नाटक की मैसूर रियासत चंद्रवंशीय क्षत्रियों की रियासत थी और ये कोडवाज भी चंद्रवंशीय क्षत्रिय माने जाते हैं। इसी कुल में 18 जनवरी 1899 (शनिवार) को सन्थे - कुर्ग में भारत के प्रथम कमांडर इन-चीफ फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा का जन्म हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा मेदीकरी और उच्च शिक्षा प्रेसीडेंसी महाविद्यालय चेन्नई से सम्पन्न हुई। के.एम. करिअप्पा एक ऐसा नाम है जिसका जिक्र किये बिना भारतीय सेना का इतिहास अधूरा है। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर भारतीय राजनेताओं की मांग पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को किंग्स कमीशन देने की स्वीकृति दे दी। कड़ी छान बीन के बाद 1919 में करिअप्पा को किंग्स कमीशन के लिए भारतीय अधिकारियों के प्रथम बैच में चुना गया और इन्फैंट्री में अस्थाई कमीशन दिया गया। एक वर्ष के बाद उन्हें स्थायी कमीशन प्रदान किया गया। कुछ समय बाद उन्हें राजपूत रेजीमेंट में नियुक्ति मिली। वे प्रथम भारतीय अधिकारी थे जिन्हें 1933 में स्टॉफ कॉलेज केटा में प्रशिक्षण लेने का गौरव प्राप्त हुआ। वे 1941-42 में सीरिया और ईरान, 1943-44 में बर्मा और कई वर्षों तक वजीरिस्तान में तैनात रहे। बर्मा की लड़ाई में उन्हें ऑर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर के पदक से सम्मानित किया गया। 1946 में उन्हें पदोन्नति देकर फ्रंटियर ब्रिगेड ग्रुप का कमांडर नियुक्त किया गया जहाँ कर्नल (बाद में फील्ड मार्शल) और पाक के पूर्व राष्ट्रपति अयूब खान उनके मातहत थे। 1947 में उन्होंने इम्पीरियल कॉलेज कैम्बरले-यूनाइटेड किंगडम से उच्च सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया जो अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी।

देश के विभाजन से पूर्व वे डिविजनल कमांडर थे। उन्होंने उस समय सेना के बंटवारे और उसके पुनर्गठन की जिम्मेदारी वहन की। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद उन्हें पहले डिप्टी चीफ ऑफ जनरल स्टॉफ पद पर लगाया गया और तुरंत बाद में लेफ्टिनेंट जनरल का प्रमोशन देकर ईस्टर्न आर्मी कमांडर के पद पर भेजा गया। 1947 में पाकिस्तान के युद्ध में उन्हें (पश्चिमी) सेना की कमान सौपी गयी। उन्होंने ऑपरेशन की कमान संभाल पुंज, राजोरी, द्रास और कारगिल से दुश्मन को खदेड़ लेह से पुनः सम्पर्क स्थापित किया। इस युद्ध के दौरान उन्होंने अपनी योग्यता प्रदर्शित कर कमांडर इन-चीफ बनने का रास्ता साफ कर लिया। परन्तु राजनेता विशेष रूप से पंडित नेहरू को अपने सेना कमांडरों की योग्यता और अनुभव पर विश्वास नहीं था अतः 1947 में उन्होंने एक बैठक का आयोजन किया। उस बैठक का उद्देश्य भारतीय सेना के लिये जनरल की नियुक्ति के बारे में विचार विमर्श करना था। इस बैठक में देश के बड़े राजनेताओं और सेना के वरिष्ठ कमांडरों को बुलाया गया था।

उस समय के कार्यकारी प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने प्रस्ताव रखा कि - 'क्योंकि हमारे सेनानायकों में सेना का नेतृत्व करने का अनुभव नहीं है अतः कुछ समय के लिए हमें अंग्रेज अधिकारी को अपनी सेना की कमान दे देनी चाहिए।' बैठक में मौजूद सभी सभासदों ने अपना सिर हिलाकर अपनी रजामन्दी जाहिर की। मगर सभा में उपस्थित लेफ्टिनेंट जनरल नाथूसिंह राठौड़ ने अपनी बात कहने के लिये स्वीकृति मांगी। नेहरू ने कहा, हाँ कहिये, आपको क्या कहना है? लेफ्टिनेंट जनरल नाथूसिंह राठौड़ ने कहा 'जैसा आप अनुभव कर रहे हैं कि हमारे सेनानायकों को सेना का नेतृत्व करने का अवसर नहीं मिला इसलिये उनमें अनुभव की कमी है अतः अंग्रेज अधिकारी को कुछ समय के लिये भारतीय सेना की कमान देना देशहित में होगा। हमारे जेहन में भी यही बात आ रही है, क्योंकि हमारे राजनेताओं को भी देश की सत्ता चलाने का अनुभव नहीं है अतः कुछ समय के लिये देश की सत्ता भी किसी अनुभवी अंग्रेज नेता को सम्भला देनी चाहिए।' यह सुन सभा में सन्नाटा छा गया। पंडित नेहरू ने अर्थपूर्ण विराम के बाद पूछा तो क्या आप जनरल बनने के लिए तैयार हैं? इस पर लेफ्टिनेंट जनरल नाथूसिंह राठौड़ ने कहा 'मैं नहीं मेरे से भी अधिक अनुभव और वरीयता वाले अधिकारी मौजूद हैं- जनरल करिअप्पा, उनका भारतीय सेना का सेनानायक होना देशहित में होगा।' इस प्रस्ताव को मान लिया गया और 15 जनवरी 1949 को भारतीय सेनाओं की कमान ब्रिटिश जनरल सर फ्रांसिस बूचर से जनरल के.एम. करिअप्पा को हस्तांतरित कर दी गयी। इस प्रकार जनरल (बाद में फील्ड मार्शल) करिअप्पा को भारत का प्रथम कमांडर-इन-चीफ बनने का गौरव प्राप्त हुआ। सेना से सेवानिवृत्ति के उपरांत 1953-56 तक वे आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में हाई कमिश्नर के पद पर रहे। उसके बाद उन्होंने कई देशों की यात्रायें की और उनकी सेना के पुनर्गठन में सहायता की। उनकी सेवाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता दशार्ते हुये अमेरिकन राष्ट्रपति हैरी एस ट्रूमेन ने उन्हें 'आर्डर ऑफ दी चीफ कमांडर ऑफ दी लेजिन ऑफ मैरिट' से सम्मानित किया। 14 जनवरी 1986 को भारत सरकार ने उन्हें फील्ड मार्शल की रैंक प्रदान कर सम्मानित किया। वस्तुतः वे इस सम्मान के बहुत पहले से हकदार थे। सेवानिवृत्ति के बाद भी 1965 और 1971 के युद्धों में जनरल करिअप्पा ने युद्ध क्षेत्रों का भ्रमण किया, सैनिकों से मिले और उनका मनोबल बढ़ाया। उनकी मान्यता थी कि राष्ट्र सेवा सेना का धर्म है और सरकार के प्रति वफादारी उसका कर्त्तव्य है। सेना का जात-पात और राजनीति से कोई लेना- देना नहीं है। उनका कहना था कि उनके लिये दो ही स्थान हैं एक हिंदुस्तान और दूसरा फौजीस्तान। उनके बारे में एक घटना प्रसिद्ध है, 1965 के युद्ध में जनरल करिअप्पा के पुत्र वायु सेना में पायलट थे। युद्ध के दौरान उनके एयरक्राप्ट को मार गिराया गया और उनको पाक सेना द्वारा कैदी बना लिया गया। परिचय पत्र और अन्य दस्तावेजों से पता चला कि वे जनरल करिअप्पा के पुत्र हैं। यह समाचार जब जनरल अयूब खान के पास पहुँचा तो उन्होंने जनरल करिअप्पा से सम्पर्क साधा और कहा कि आपका पुत्र सुरक्षित है और उसे शीघ्र ही रिहा कर दिया जायेगा। इस पर जनरल करिअप्पा ने तैश में आकर कहा कि उनका पुत्र अब भारत माता का पुत्र है इसलिये शेष युद्ध बन्दियों के साथ जैसा व्यवहार किया जा रहा है वैसा ही उनके पुत्र के साथ भी किया जाये और कहा कि आपकी हमदर्दी के लिये धन्यवाद। छोड़ना है तो सभी को छोड़ो वरना मुझ पर रहम करने की कोई आवश्यकता नहीं। ऐसे देशभक्त थे फील्ड मार्शल के.एम. करिअप्पा। 15 मई 1993 को बैंगलोर में उनका निधन हो गया। भारतीय सेना अपने उस कर्त्तव्यनिष्ठ सिपाही के अविस्मरणीय योगदान को कभी नहीं भूल सकती।

भारतीय पंचांग... (पृष्ठ एक का शेष)

पूज्य हरिसिंह जी बापू गढुला गुजरात में जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वे ऐसे निस्पृह राजनेता थे जो दूसरों को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं पीछे हट जाते थे। दो बार विधायक भी रहे। राजकोट के मेयर रहे। भूस्वामी आंदोलन के दौरान वे राजस्थान आए, संघ से प्रभावित हुए और वे संघ को गुजरात में लेकर आए और उसी के परिणाम स्वरूप हमारे जीवन में संघ का प्रवेश हो पाया। उनके प्रयास से ही गुजरात के भावनगर राजपूत बोर्डिंग में 5 से 11 अक्टूबर 1957 तक संघ का प्रथम शिविर हुआ। चन्द्रसिंह जी भाडवा ने सौराष्ट्र में सरकार द्वारा राजपूतों की जमीनें छीने जाने के विरुद्ध आमरण अनशन किया और सरकार को अपने नियमों में बदलाव करने को मजबूर किया। उन्होंने गुजरात के राजपूतों में व्यसन मुक्ति के लिए विशेष प्रयास किया। जयपुर में संघ के स्वयंसेवक प्रेमसिंह वनवासा ने प्रतिवर्ष की भांति जयंती कार्यक्रम रखा लेकिन वह भी ऑनलाईन था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नींबाराम व भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया के अलावा संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास का इस कार्यक्रम में संबोधन हुआ। संचालन प्रमुख जी ने गीता में वर्णित क्षत्रिय के गुणों के आधार पर स्पष्ट किया कि महाराणा प्रताप एक आदर्श क्षत्रिय थे। वे स्वाधीन थे इसलिए स्वतंत्र रहे और अपनी स्वतंत्रता के कारण अपने स्वाभिमान की रक्षा कर पाए। श्री गंगानगर में इस अवसर पर सर्वसमाज द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। ब्रिटेन में रहने वाले समाज बंधुओं ने महाराणा प्रताप फाउंडेशन यु.के. एवं अन्य संगठनों के सहयोग से वेबनार आयोजित कर उसे सोशल मीडिया में लाईव कर जयंती मनाई। वेबनार के माध्यम से केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिग्विजयसिंह, महंत प्रतापपुरी जी, कांग्रेस नेता मनीष तिंवारी, दीपेन्द्र हुड्डा, शक्तिसिंह गोहिल, बालेन्दु शेखावत, विधायक सुरेश रावत, मीना कंवर आदि लोग जुड़े एवं महाराणा प्रताप के जीवन के बारे में अपने विचार रखे। राजपूत सभा जयपुर द्वारा भी सभा के केन्द्रीय कार्यालय में महाराणा प्रताप की तस्वीर पर पुष्पांजलि कर जयंती मनाई गई। इसके अतिरिक्त भी विभिन्न संगठनों ने इस अवसर पर प्रताप को याद किया। संघ के स्वयंसेवकों ने केन्द्रीय वर्चुअल कार्यक्रम के साथ अपने घरों में रहकर पुष्पांजलि अर्पित की।

(पृष्ठ दो का शेष)

दोनों प्रश्नपत्र सिविल इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, मेकैनिकल इंजीनियरिंग तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन्स इंजीनियरिंग में से अभ्यर्थी द्वारा चुने गए विषय के होते हैं। यह प्रश्नपत्र विषयनिष्ठ प्रकार के होते हैं तथा प्रत्येक की अवधि 3 घंटे की होती है। प्रत्येक प्रश्नपत्र 300 अंको का होता है।

(iii) व्यक्तित्व परीक्षण/साक्षात्कार- इसके अंतर्गत संघ लोक सेवा आयोग द्वारा गठित विशेषज्ञों के बोर्ड द्वारा अभ्यर्थी का साक्षात्कार लिया जाता है। इसके लिए कुल 200 अंक निर्धारित हैं।

ESE परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों को भारत सरकार के विभिन्न विभागों में क्लास-1 अधिकारी के रूप में नियुक्ति दी जाती है।

विस्तृत जानकारी के लिए upsc.gov.in को विजिट करें। **(क्रमशः)**

नरेन्द्रसिंह जसोल को मातृशोक

श्रीमती जड़ाव कंवर

संघ के स्वयंसेवक नरेन्द्रसिंह जसोल की माताजी **श्रीमती जड़ाव कंवर** का 17मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अखंड शांति प्रदान करावें।

यशवर्धनसिंह को मातृशोक

श्रीमती सुमन कंवर

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की केन्द्रीय टीम के सदस्य यशवर्धनसिंह झेरली की माताजी एवं झुंझुनूं के पूर्व विधायक डॉ. मूलसिंह शेखावत की माताजी **श्रीमती सुमन कंवर** का 17 मई को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं दिवंगत आत्मा को अखंड शांति देने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

वर्चुअल शाखा से मिल रहा है मार्गदर्शन

नारादरा (सिरोही)

कोरोना महामारी के कारण हुए लॉकडाउन के बीच श्री क्षत्रिय युवक संघ ने 13 मई से केन्द्रीय स्तर पर वर्चुअल शाखा का एक अभिनव प्रयोग किया जो संघ के स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों में निरन्तर आकर्षण का केन्द्र बनता जा रहा है। प्रतिदिन सायं 8.30 से 9.30 के बीच लगने वाली शाखा में 8.45 बजे फेसबुक व युट्यूब पर 'साधक की समस्याएं' पुस्तक पर माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी एवं 'गीता और समाजसेवा' पुस्तक पर माननीय अजीतसिंह जी धोलेरा का मार्गदर्शन मिल रहा है। समाचार लिखे जाने दोनों पुस्तकों के तीन-तीन प्रकरणों की विवेचना हो चुकी थी। प्रतिदिन शाखा के समय के अलावा भी हजारों लोगों तक संघ का संदेश इस माध्यम से पहुंच रहा है। साधक की समस्याओं के तहत महत्वाकांक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा हुई, साधना का युग के अनुकूल कैसे होना चाहिए इस पर भी विस्तार से चर्चा हुई। गीता और समाजसेवा में माननीय अजीतसिंह जी द्वारा धर्म का स्वरूप स्पष्ट करते हुए 'गीता एक धर्म ग्रन्थ', 'युग परिवर्तक गीता' व 'सखा भाव' विषय की विस्तार से विवेचना की गई। उन्होंने बताया कि कैसे संघ हमें अर्जुन बनाकर गीता ज्ञान के लिए उपयुक्त पात्र बनाता है। कोरोना काल की आफत में यह शाखा संघ के स्वयंसेवकों के लिए अवसर बनकर आई है।

प्रधानमंत्री ने की पलसाना सरपंच की सराहना

कोरोना संकटकाल में आफत को अवसर में बदलने का उदाहरण बनकर उभरे हैं पलसाना सरपंच रूपसिंह शेखावत। उन्होंने विद्यालय में बने वेलनेस सेंटर में ठहरे प्रवासी कामगारों के लिए जनसहयोग से भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था की। साथ ही कामगारों से उनके समय का सदुपयोग करने का आग्रह किया। उनके आग्रह को स्वीकार कर कामगारों ने विद्यालय की रंगाई पुताई का काम हाथ में लिया और पूरे विद्यालय की रंगत ही बदल दी। जिसने भी सरपंच रूपसिंह के इस प्रयोग के बारे में सुना, सराहना की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में उनके इस कार्य की सराहना की। केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत, पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट आदि ने भी फोन द्वारा सरपंच रूपसिंह को उनके इस प्रयोग के लिए बधाई दी। रूपसिंह शेखावाटी क्षेत्र में संघ के सहयोगी हैं और उन्होंने कई शिविर भी किए हैं।

आपत्तिजनक संदेशों पर वैध प्रतिक्रिया

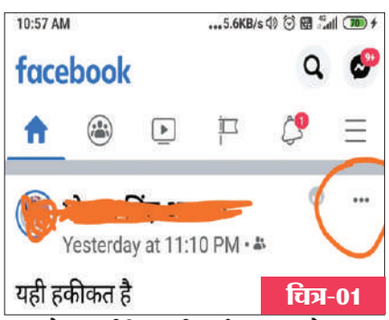

चित्र-01

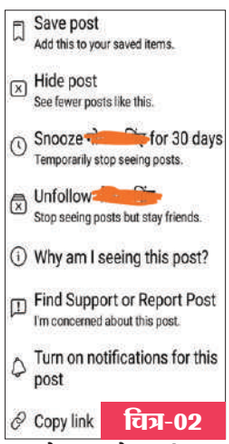

चित्र-02

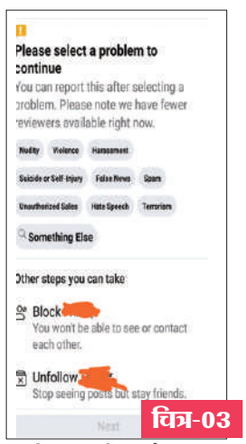

चित्र-03

चित्र-04

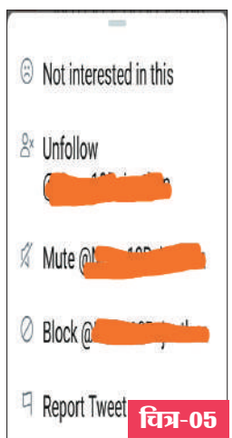

चित्र-05

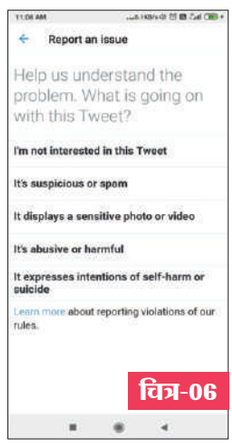

चित्र-06

सोशल मीडिया की सर्व सुलभता के कारण शरारती तत्वों द्वारा जानबूझकर सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के लिए आपत्तिजनक संदेश प्रसारित किए जाते हैं। ऐसे संदेशों की प्रतिक्रिया में फिर से आपत्तिजनक संदेश भेजे जाते हैं या टिप्पणी की जाती है जिससे कुत्सित मस्तिष्क के लोग अपने कृत्यों में सफल हो जाते हैं। प्रतिक्रिया करने से मना करने पर भी हमारा प्रतिक्रियावादी स्वभाव विद्रोह करता है और सहन न करने को उतावला होता है। ऐसे में हम सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त करने के वैध तरीकों का इस्तेमाल कर उस संबंधित संदेश को रुकवा सकते हैं, उसकी रिपोर्ट कर सकते है। फेसबुक और ट्विटर पर आने वाले आपत्तिजनक संदेशों की रिपोर्ट करने की प्रक्रिया निम्नानुसार है।

फेसबुक की जिस पोस्ट को हम आपत्तिजनक मानते है उसके लिए निम्न चरणों में हम रिपोर्ट कर सकते है।

1. सर्वप्रथम हम संबंधित पोस्ट के ऊपर दायीं ओर स्थित (...) तीन डॉट पर क्लिक करें।

(चित्र-01 के अनुसार)

ऐसा करने पर निम्नानुसार विकल्प दिखाई देंगे-

(देखें चित्र-02)

2. यदि हम इस पोस्ट को नहीं देखना चाहते है तो Hide Post पर क्लिक करें।

3. यदि हम आगामी 30 दिन तक संबंधित व्यक्ति की किसी भी पोस्ट को नहीं देखना चाहते तो Snooze पर क्लिक करें।

4. यदि आप संबंधित व्यक्ति की पोस्ट हमेशा के लिए नहीं देखना चाहते तो Unfollow करें।

5. यदि आप इस पोस्ट की रिपोर्ट करना चाहते हैं तो Find Support of Report Post पर क्लिक करें। ऐसा करने पर स्क्रीन पर निम्नानुसार विकल्प दिखाई देंगे। (चित्र-03) इसमें निम्न विकल्प है :

(1) Nudity (नग्नता), (2) Voience (हिंसा), (3) Harassment (परेशान करना), (4) Sucide or self Injury (आत्मघाती), (5) False News (झूठी न्यूज), (6) Spam (अवांछित संदेश), (7) Unauthorized (अनाधिकृत), (8) Hate Speech (घृणा फैलाने वाले), (9) Terrorism (आतंकवाद)।

इनमें से आप जिसे उचित समझें क्लिक करें, आगे के विकल्पों का चयन कर, सबमिट कर देवें।

6. फेसबुक आपकी शिकायत की जांच करेगा एवं सही पाए जाने पर उस पोस्ट को हटाएगा अन्यथा तत्संबंधी कार्रवाई करेगा। यही संबंधित व्यक्ति को ब्लाक (आपके अकाउंट पर हमेशा के लिए बंद) करने का भी विकल्प रहता है।

इसी प्रकार ट्विटर पर भी ऐसा ही शिकायत का प्रावधान है :

1. प्रत्येक पोस्ट के दांयी तरफ एक (V) तीर का सा निशान होता है। **(चित्र-4)**।

इस पर क्लिक करने पर निम्न विकल्प दिखाई देते हैं - **(चित्र-5)**।

2. पहले विकल्प (Not interested in this) पर क्लिक करने पर ट्विटर आपको वैसे संदेश भेजना बंद कर देगा।

3. चौथे विकल्प (Block) पर क्लिक करने से संबंधित व्यक्ति की पोस्ट आपकी आईडी पर आनी बंद हो जाएगी।

4. अन्तिम विकल्प (Report) पर क्लिक करने पर आपकी स्क्रीन पर पांच विकल्प आएंगे। इनमें से किसी पर क्लिक करने से आगे और विकल्प आएंगे। उनमें दी गई आगे की प्रक्रिया का अनुपालन कर का हम संबंधित ट्वीट की शिकायत कर सकते हैं। ट्विटर हमारी शिकायत पर संतुष्ट होने पर अपेक्षित कार्रवाई करेगा। इस प्रकार हम सीधे उस व्यक्ति से उलझने की अपेक्षा संबंधित सोशल मीडिया- प्लेटफॉर्म की निश्चित प्रक्रिया का उपयोग कर वैधानिक रूप से हमारी प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इससे प्रतिक्रिया के आवेश में हम भी गलत करने से बच सकते हैं।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org